नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

लोकगीतो में पर्यावरण चेतना

डॉ. अश्विनी कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इंडियन क्लासिकल म्यूजिक (वोकल),
फैकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, द महाराजा सयाजीराव युनि., बड़ौदा

सार-संक्षेप

मानव जीवन और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य सभी जंतुओं में सबसे अधिक बुद्धिमान और शक्तिशाली है। शहरी जीवन शैली अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि और औद्योगिकरण ने पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित किया। मानव सृष्टि के साथ ही लोकगीतों का भी इतिहास रहा है। इन लोकगीतों में मानव के रागात्मक संवेदना के साथ-साथ प्रकृति का सौंदर्य भी सम्मिलित रहता है। लोकगीतों का संबंध प्रकृति से भी बहुत रहता है। प्रकृति में वायु, मिट्टी, जल, अग्नि, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी के साथ एक संतुलन विद्यमान है। पारम्परिक लोकगीतों में प्रतीकों के माध्यम से पर्यावरण चिंतन के संकेत मिलते है। आज पूरी दुनिया पर्यावरण असंतुलन से चिंतित है। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हमारे पूर्वज प्रारंभ से रहे हैं और इनके गीतों में भी वृक्ष, नदी, सरोवर, पोखर, कुआँ आदि की उपयोगिता का वर्णन देखने को मिलता है। जल, वायु, मिट्टी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी सृष्टि के लिए आवश्यक है। हमारे पूर्वज ये अच्छी तरह से जानते थे उन्होंने नदियों को माँ का दर्जा दिया है जिसका वर्णन अनेक लोकगीतों में देखने को मिलता है। विभिन्न संस्कार गीतो म में देवी-देवता के गीतो में, ऋतु गीतों में भी प्रकृति के तत्वो के प्रति आदर के भाव और संरक्षण संवर्धन की बात कही गयी है।

मुख्य शब्द : पर्यावरण, लोकगीत, ऋतु गीत, सृष्टि, हिन्दु विवाह

शोध-पत्र

मानव जीवन और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य सभी जंतुओं में सबसे अधिक बुद्धिमान और शक्तिशाली है। शहरी जीवन शैली अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि और औद्योगिकरण ने पर्यावरण को बहुत हद तक प्रभावित किया है। जीवमंडल पर पर्यावरण का बुरा प्रभाव पड़ना शुरू हो गया है और यदि हम पर्यावरण के प्रति सचेत नहीं होंगे तो इसका परिणाम बहुत भयावह हो जाएगा।

मानव सृष्टि के साथ ही लोकगीतों का भी इतिहास रहा है। इन लोकगीतों में मानव के रागात्मक संवेदना के साथ-साथ प्रकृति का सौंदर्य भी सम्मिलित रहता है। लोकगीतों का संबंध प्रकृति से भी बहुत रहता है। प्रकृति में वायु, मिट्टी, जल, अग्नि, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी के साथ एक संतुलन विद्यमान है। पारम्परिक लोकगीतों में प्रतीकों के माध्यम से पर्यावरण चिंतन के संकेत मिलते है। आज पुरी दुनिया पर्यावरण असंतुलन से चिंतित है। लोकगीतों में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित गीतों की कमी नहीं है। वायु, जल, मिट्टी, पेड़-पौधों के संरक्षण से संबंधित गीतों की भरमार है तो इनके असंतुलन से होने वाली समस्याओं का भी वर्णन भी लोकगीतों में बहुत देखने को मिलते हैं। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हमारे पूर्वज प्रारंभ से रहे हैं और इनके गीतों में भी वृक्ष, नदी, सरोवर, पोखर, कुआ आदि की उपयोगिता का वर्णन देखने को मिलता है। जल, वायु, मिट्टी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी सृष्टि के लिए आवश्यक है। हमारे पूर्वज ये अच्छी तरह से जानते थे उन्होंने नदियों को माँ का दर्जा दिया है जिसका वर्णन अनेक लोकगीतों में देखने को मिलता है। विभिन्न संस्कार गीतों में देवी-देवता के गीतो में, ऋतु गीतों में भी प्रकृति के तत्वों के प्रति आदर के भाव और संरक्षण संवर्धन की बात कही गयी है।

लोकगीत लोकमानस के उपज होते हैं इनके रागात्मक वृत्ति की लयबद्ध अभिव्यक्ति ही लोकगीत है। मानव समाज के साथ ही लोकगीत का भी इतिहास है इन लोकगीतों में ही भारतीय संस्कृति के प्रतिबिंब उजागर होते हैं। लोकगीत समाज के दर्पण होते हैं, कहा जाता है कि यदि किसी देश की सभ्यता संस्कृति का अध्ययन करना है तो वहाँ के लोकगीत का अध्ययन करना चाहिए। लोकगीत के संदर्भ में लोक मानस सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व होता है। लोकमानस लोक से सम्बद्ध रहता है इसलिए उसकी पृष्ठभूमि परंपरा और रूढ़ियों से निर्मित होती है। लोकगीतों में मानव के रागात्मक संवेदना के साथ प्रकृति का सौंदर्य भी होता है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक के विभिन्न संस्कारों में प्रकृति का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व मिट्टी है, यह जन्म से लेकन अन्तयोष्टि तक मनुष्य के साथ जुड़ी रहती है। विवाह संस्कार आदि में तो पूजा मटकोर से लेकर मंडप तथा वेदी निर्माण से लेकर पणिग्रहण तक मिट्टी की भूमिका बनी रहती है। विभिन्न संस्कारों में प्रकृति की यह उपस्थिति इनसे हमारी गहरी जुड़ाव को सिद्ध करती है।

लोक साहित्य की मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. शांति जैन लोक शब्द की व्यापकता को बताते हुए कहती है–''सूक्ष्म रूप से लोक का अर्थ है दृश्य जगत और उसमें सूक्ष्म विचरण। उत्तर वैदिक काल और महाभारत युग में 'लोक' का अर्थ पृथ्वी लोक और उसके निवासियों से किया गया है। अर्थात् लोक से लौकिक अर्थ हुआ। लोक के योग से कई शब्द बनते हैं जैसे–लोकगीत, लोकगाथा, लोकाचार, लोकरंजन, लोकवृत्ति आदि। सभी शब्दों में 'लोक' का अर्थ व्यापक मानव व्यवहार है अथवा मूल्य बोध से प्रेरित स्वीकृत व्यवहार की चेतना है।''[1]

हिन्दू विवाह संस्कार के वैवाहिक विधियों में प्रकृति के महत्त्वपूर्ण घटक मिट्टी, जल, अग्नि, पुष्प, हल्दी, चंदन के बिना कोई विधान पूरा नहीं होता। विवाह के दो-तीन दिन पूर्व हल्दी तथा तेल से उबटन किया जाता है ये हल्दी, तेल शरीर के लिए लाभप्रद होने के अतिरिक्त मंगलमय भी माने जाते हैं।

''सोने के कटोरी में उबटन धोरल रूपे कटोरी लेल,
दुलरूआ के अंग लागे उबटन तेल,
आज दूल्हा के अंग लागे उबटन तेल।''[2]
''बाबा के खेत में उपजि गेलइ मेथिया,
से हो मेथिया के उबटन लगायत मोरे दुलरूआ
लगन आयल रे मेथिया।''[3]

उबटन में हल्दी और मैथी शरीर की ऊर्जा को बढ़ाता है साथ ही मौसमी रोगों से शरीर की रक्षा करता है।

विवाह संस्कार में मण्डपाच्छादन के पहले घर से दूर किसी नदी, तालाब या पोखर के किनारे से मिट्टी लाने की विधि पूर्ण की जाती है और सखियां गाती है–

''सब सखियन मिलि चलते पोखरिया,
हे सोहावन लागे।
मंगल कलश बेल सिन्दूर अंकुरिया
हे सोहावन लागे।
सखी सब हाथ लेले सोना के कोदरिया
हे सोहावन लागे।''[4]

गाँवों में नदी, तालाब, पोखर, जल के प्रमुख श्रोत है। जिनसे ग्रामिण जन का गहरा जुड़ाव रहता है। विवाह संस्कार आदि में किसी जलाशय के किनारे से मिट्टी लाने के पीछे यह उद्देश्य रहता है कि वर-वधू जलाशन के महत्त्व को समझे। पर्यावरण के संतुलन के लिए जलाशय स्वच्छ और शुद्ध रहें यह अति आवश्यक है। लोकगीतों की प्रमुख विद्या ऋतु गीतों में पर्यावरण चिंतन सबसे मुखर रूप से आता है। निम्न गीत में पर्यावरण के दुष्परिणामों के कारण बढ़ते गर्मी के प्रकोप को उजागर किया गया है–

''दिनवाँ में घाम लागे, रतिया बरसे आगी
चल छैला परदेस भागी,
इहों नाहीं कोयला मिले,
इहों नाही चिरंवजी मिले,
नाही मिले भँवर रे,
गुलरी के पेड़ नाही,
कइसे टिकुली लगाईं रे।''[5]

पर्यावरण चिंतन की दृष्टि से वर्षा ऋतु के गीत पावस गीत की प्रमुखता रही है कुछ पावस गीतों में प्रकृति में आए परिवर्तन का भी सूक्ष्म चित्रण देखने को मिलता है–

''दइया इंद्र के करहु इंद्र पुजवा हे ना,
दइया गाँव के ठिकदरवा अनजानु साही ना,
दइया धोड़वा निरखइ बदरा हे ना,
दइया मूसरे के धार पनिया बरसई हे ना।''

मूसलाधार बारिश लोगों को भयग्रस्त कर रही है। यह शायद भगवान इंद्र का प्रकोप है। अब इंद्र की पूजा से ही कुछ भला होगा।

किसी भी शुभ मांगलिक अवसर पर गाये जाने वाले देवी गीतों में नीम, पीपल, अनार, इमली, बेल आदि का वर्णन सुख मिलता है–

''निमिआ के डाढ मइया लावेली आसनवा कि झूली झूली,
मइया गावेली गीतिया की झूलि झूलिना
झूलते झूलत मैया के लागल पियसिया चलि भइली,
मल्होरिया दुआर कि चली मईली।

लोकगीतों में तुलसी के महान को भी रेखांकित किया गया है–

लहर-लहर लहराए जी मेरे अंगना की तुलसी
इस तुलसी में क्या-क्या गुण है?
ये तो हवा कि खुश्बू लाये रे,
मेरे आँगन की तुलसी।

लोक जीवन में तुलसी, नीम, पीपल का बहुत महत्त्व है लोग इनकी पूजा भी करते हैं। चिकित्सकीय शोध से पता चला है कि तुलसी के पत्ते कई रोगों के उपचार में भी काम आते हैं। पर्यावरण में भी तुलसी के पौधे सुगंध लाते हैं। तुलसी से संबंधित गीत, लोक मानस में भी खूब प्रचलन में है–

''चन्दन के पेड़ तुलसी का बिरवा,
ई दुनों लग जाए मोर अँगना।''[6]

लोकगीतों में पर्यावरण की शुद्धि के प्रति सजगता को दर्शाते हुए पचरा गाया जाता है–

''छोटी-मोटी नीम की गछिया,
शीतल बतास हो
सबके त बेरिया नीमिया
लहु लहु पतवा हो
हमरा के बेटिया हो नीमिया
झरि झरि जास हो।''
देखे विहानाटे
काटे देहु निमिया हो
आरे जरि से कटाइब निमिया

बोअबे अनार हे
तोहरे जरि रोपव निमिया
उडहुल के डरिया हो
रोवेल निमिया के डरिया
नैना ढ़रे लोर हो
अरे अब के गुनहिया माता
बकसी हमार हो
बोअबो हम निमिया गछिया
बही रे बयार हो।''[7]

उपर्युक्त गीत में देवी माँ नीम के पेड़ से संवाद करते हुए कहती है–पतझड़ ऋतु है नीम के पत्ते जड़ चुके है इसलिए वायु की शीतलता प्रभावित हो रही है। देवी नीम के पेड़ से संवाद करते हुए कहती है कि दूसरे लोगों को तुमने अपने सुन्दर पत्तों से शीतल हवा का लाभ हुए हों पर मेरे समय तुम सभी पत्ते झाड़ कर खड़े हो। अब तुम्हारे जड़ काट दिए जाऐंगे और देवी वहाँ पर अनार और अढ़उल रोपने की बात करती है, जो उनके भोग और शृंगार के काम आएँगे। हालाँकि देवी को शुद्ध वायु चाहिए इसके लिए वह नीम को क्षमा कर देती है और उसे पुनः रोपने की बात करती है। नीम का पेड़ पर्यावरण संतुलन के लिए बहुत आवश्यक है।

भूमंडीलकरण के दौड़ में बढ़ती जनसंख्या का बोझ शहरीकरण की दौड़ औद्योगीकरण ने पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर्यावरण को सबसे ज्यादा दूषित किया है। इस बड़ी समस्या पर विरोध लोकगीतों में देखने को मिलता है–

''निमिया के डाढ जनि कटवइह हो बाबा,
निमिया चिड़ईया के बसेर हो बाबा
बेटी के उरेढ़ बोली बोलिहा जनि हो बाबा
बेटी चिड़ईया के बसेर हो बाबा।''[8]

उपर्युक्त बेटी विदाई के गीत के माध्यम से पेड़ काटे जाने का विरोध किया गया है। बिहार की सुप्रसिद्ध लोकगायिका विन्ध्यवासिनि देवी ने वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और इसके कुप्रभाव पर बड़ा ही सुंदर गीत गाया है–

''गोड़ तोरा लागीला पिया पतरंगिया,
से जनी काटऽहो पिया गछिया बिरिछिया
कटि जइहें वन, रूसि भगिहें बदरिया
कइसे गाइब हो झुलुआ पर कजरिया
बचिहें जंगलवा त करिहें मंगलवा,
बचा के राखऽ हो पिया गछिया बिरिछिया।''[9]

वृक्षों की लगातार कटाई ने जल के श्रोतों को भी प्रभावित किया है। शुद्ध जल के लिए जग में हाहाकार मचा हुआ है। इस समस्या पर यह लोकगीत दृष्टव्य है–

''नदिया के पनियाँ से पेड़ हरियइहें,
सीढ़ी बनी मोरे तोरे बीच
बाग बगइचा के देह गदरइहें
सुखवा से जाइ मन भींज
सुन-सुन लोगवा से मोरा इ कहनवाँ
नेहिया से सीचिहे बिरिछिया
नाहीं त पानी बिनु जरी रे उमिरिया
निरजल होखी रे जिनिगिया
पनिया बा प्राण के आधार भैया
पानी बिनु जग हाहाकार।''[10]

कल कारखानो से प्रदूषित होते वातावरण का वर्णन और इस संकट से निबटने का आहवान इस गीत में किया गया है–

''बचावे के परी हो बचावे के परी,
प्रदूषण से धरती बचावे के परी,
चिमनियन के करिया धुआँ से,
दूषित भइले असमनवा,
खतम करऽन हरियाली के
मत काटऽ अब बनवाँ
अब डेगे डेगे गछिया लगावे के परी
प्रदूषण से धरती बचावे के परी।''[11]

उपर्युक्त गीत हमें परंपरा से तो प्राप्त नहीं है परंतु लोक कलाकारों ने लोकजीवन में व्याप्त मानवीय संकट की अभिव्यक्ति अपने तरह से की है। पारंपरिक गीतों में संकेतात्मक अभिव्यंजना देखने को मिलता है वहीं बाद के गीत ने पर्यावरण चेतना के गीत लिखकर सजग कर रहे हैं।

लोकगीतों का सघन संबंध प्रकृति से है। प्रकृति में वायु, मिटट्टी, जल, अग्नि, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी के साथ एक संतुलन विद्यमान है जो हमारे अस्तित्व को आधार प्रदान करते हैं। इनके संतुलन के बिना हमारा जीवन संतुलन नहीं हो सकता। प्रकृति मानव के लिए अपने भीतर निहित जीवन का अक्षय श्रोत न्यौछावर करती है किन्तु मनुष्य इसका लगातार दोहन करता है जो एक बड़ी समस्या के रूप में पूरे विश्व के सामने मुँह बाँधे खड़ी है।

लोकगीत प्रकृति की गाथा है। उनमें प्रकृति के साथ मानवीय व्यवहार की व्याख्या भी है। पर्यावरण चिंतन वर्तमान समय की देन है इस कारण उसके असंतुलन के स्पष्ट संकेत पूर्व के लोकगीत में कम दिखाई देते हैं। परंतु वहाँ प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति के संरक्षण और उससे अपनी जुड़ाव को दर्शाया गया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लोकगीतों का गहरा जुड़ाव प्रकृति से रहा है। पर्यावरण के घटक वायु, जल, मिट्टी सभी प्रकृति के संतुलन को बनाएँ रखते हैं। यह संतुलन न केवल प्रकृति के सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आवश्यक है बल्कि हमारे दैनिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए भी जरूरी है। आज पूरी दुनिया पर्यावरण असंतुलन की चिंता से भयाक्रांत है। जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग रोका नहीं गया तो भविष्य का परिणाम बहुत ही घातक होगा। प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग व्यवस्थित एवं सीमित रूप से होना चाहिए इसके

लिए जन साधारण में जागृति होना जरूरी है। जनमानस के गीत लोकगीत चाहे संस्कार गीत हो, देवी देवता के गीत हो, ऋतु गीत हो या कर्म गीत इन सभी गीतों में गाहे बगाहे प्रकृति के साथ का संबंध और इनके संरक्षण के संकेत मिलते रहे हैं।

सन्दर्भ

1. जैन शांति, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृ. 155, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-1999
2. देवी कमला लोकगीत संग्रह, पृ. 45, अमेजोन, वर्ष-1998, पारंपरिक लोकगीत
3. देवी कमला लोकगीत संग्रह, पृ. 45, अमेजोन, वर्ष-1998, पारंपरिक लोकगीत
4. जैन शांति लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृ. 187, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पटना, वर्ष-1999
5. जैन शांति, बिहार के भक्तिपरक लोकगीत, पृ. 45, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-2017
6. पारम्परिक लोकगीत
7. लोकगायिका चंदन तिवारी से प्राप्त
8. लोकगायिका विन्ध्यवासिनी देवी के रिकार्ड से प्राप्त
9. जैन शांति लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृ. 678, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पटना, वर्ष-1999
10. जैन शांति लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, पृ. 675, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पटना, वर्ष-1999